e-paper : www.dailynewsactivist.com लखनऊ, गुरुवार, 5 मार्च 2020, फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष दशमी, संवत् 2076 विक्रमी वर्ष-13, अंक-142, पृष्ठ-12, मूल्य- ₹ 2.00, नगर संस्करण

शब्द शब्द संघर्ष

DNA डेली न्यूज़ ऐक्टिविस्ट

RNI NO.: UPHIN/2007/41982 संस्करण : लखनऊ राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक website : www.dnahindi.com डाक पंजीयन : एसएसपी/एल.डब्लू./एन.पी.-358/2016-18

अबकी बार जल्दी नहीं जाएगी ठंड

अभिमत

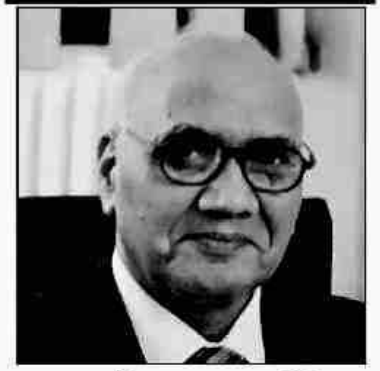

● डॉ. भरत राज सिंह

brsinghlko@gmail.com

पिछले वर्ष भारत में नवंबर-दिसंबर में मौसम विभाग के मुताबिक पश्चिम से होने वाले डिस्टरबेंस की वजह से उत्तर भारत में विशेष रूप से कश्मीर घाटी, हिमाचल में भारी बर्फबारी हुई और पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने से मैदानी इलाकों में शीतलहर चली। इसके साथ ही, यदि हवा का रुख उत्तरी हो तो यहां ठंड पड़ती है। विगत 15 नवंबर को पहाड़ों पर बर्फबारी, अव्लांच यानी हिमस्खलन और भीषण बारिश से ठंड के साथ शीतलहर ने भी आमजनों की कठिनाई बढ़ा दी थी और मैदानी इलाकों में भी पहाड़ों पर हो रही बर्फबारी का असर दिल्ली-एनसीआर में कड़ाके की सर्दी के कारण दिखाई दिया और कश्मीर की प्रसिद्ध डल झील समेत सभी जलस्रोत व नल आंशिक तौर पर जम गए हैं व राजस्थान के माउंट आबू की झील भी जम गई थी। इसी बीच उत्तराखंड में हुई बर्फबारी और बारिश के बाद पहाड़ से लेकर मैदान तक सर्दी का प्रकोप बढ़ गया और मैदानों इलाकों में जबरदस्त कोहरा पसरा रहा। हिमाचल में जबरदस्त बर्फबारी का आलम रहा। धर्मशाला, डलहौजी, चंबा, खजियार, कुल्लू और कसौली में कई बार अव्लांच के कारण जनजीवन सिकुड़ कर कमरों में बंद हो गया। इन इलाकों में सड़कें बंद पड़ी हुई हैं, जिससे दैनिक उपयोग की वस्तुओं की आपूर्ति भी नहीं हो पा रही थी। चंबा जिले में 26 सड़कों पर यातायात बहाल नहीं होने में बीसों दिन लग गए। वहीं बिजली आपूर्ति ठप्प पड़ी हुई थी। तापमान 8-10 डिग्री सेंटीग्रेड तक गिर गया। यहां तक कि सड़क पर बर्फ का बड़ा टुकड़ा 10 फीट ऊंचा हिस्सा सड़क पर खिसकता नजर आया, जिससे सड़क पर चल रहे ट्रकों को छोड़कर वाहन चालक भाग खड़े हुए। सर्द हवा की ठिठुरन व कोहरे से उत्तरी भारत का अधिकतर हिस्सा हरिद्वार से लेकर दिल्ली, लखनऊ, जौनपुर व वाराणसी तक चपेट में रहा। मैदानी इलाकों में जैसे लखनऊ में तापमान 0-1 डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुंच गया था, कई जगह नल के पानी जम गए। इसी के साथ एक और भयावह स्थिति है कि देश के 91 प्रमुख जलाशयों का जलस्तर लगातार गिर रहा है, इनकी जल संचयन क्षमता दिसम्बर 2019 में 62 प्रतिशत हो गई, जो नवंबर 2019 के अंतिम सप्ताह तक 64 प्रतिशत थी। पानी नवंबर 2019 के अंतिम सप्ताह 101.77 अरब घनमीटर था, जो दिसंबर 2019 में घट कर 98.57 अरब घन मीटर रह गया है। पिछले साल की तुलना में इन जलाशयों में इस समय तक पानी का स्तर काफी कम है। बीते वर्ष इस समय इनमें 96 प्रतिशत जलसंचय था। इन जलाशयों की कुल क्षमता 157.799 अरब घनमीटर है। पूरे देश में हुई कम बारिश के कारण, इन जलाशयों में शुरू से ही कम जलसंचय हुआ है। पर्याप्त वर्षा के न होने और लगातार दोहन के चलते आने वाले दिनों में पानी की किल्लत होना संभावित है। इस वर्ष देश के संपूर्ण तटीय क्षेत्रों में भीषण बारिश हुई, नतीजन उड़ीसा, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र व गुजरात के तटीय क्षेत्र के शहरों में जनजीवन महीनों अस्तव्यस्त रहा। यही नहीं पूरे विश्व में अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी, चीन, कोरिया, ऑस्ट्रेलिया व जापान आदि में सुनामी की प्रकोप तथा अतिवृष्टि, बर्फबारी आदि से संपूर्ण जनजीवन त्राहिमाम हो चुका है। क्या कभी हमने सोचा यह क्यों हो रहा है। हां, पिछली शताब्दी से स्थिति धीरे-धीरे बिगड़ रही थी, परंतु विगत दो-तीन दशकों से इसमें अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। इसका मुख्य कारण है, मनुष्य द्वारा प्रकृति से की गई छेड़छाड़, पेड़ों को अप्रत्याशित ढंग से काटना और वाहनों व औद्योगिकीकरण का बढ़ना। आज ध्रुवों व पहाड़ों पर जमी बर्फ पिघलकर शून्य की तरफ पहुंचने के कगार पर है। आनेवाले चार-पांच दशकों में दुनिया में बर्फीले क्षेत्र न के बराबर दिखाई पड़ेंगे। जलवायु परिवर्तन जिस तेजी हो रहा है, सभी ऋतुओं में परिवर्तन हो रहा है और स्थानीय मौसम में यह अप्रत्याशित हो रहा है कि कब बारिश हो जाएगी, कब कोहरा या बर्फ पड़ने लगेगी या अतिवृष्टि की संभावना है, मौसम विभाग बताने में सक्षम नहीं हो पा रहा है। अभी हाल में ही मौसम विज्ञान विभाग, भारत सरकार द्वारा यह बताया गया कि पश्चिमोत्तर, पश्चिम, मध्य और दक्षिण भारत के इलाकों में मार्च, अप्रैल व मई के महीनों में सामान्य से अधिक गर्मी पड़ने की उम्मीद है, जिसमें लू व हीटवेव का प्रकोप रहेगा तथा तापमान में भी 43 प्रतिशत बढ़ोतरी की संभावना जताई है। प्रत्येक वर्ष वैश्विक तापमान में बढ़ोतरी से ध्रुवों व अन्य पहाड़ी इलाकों के ग्लेशियर से बर्फीली चट्टानें तेजी से पिघल रही हैं और इसके असर से समुद्र का पानी बढ़ रहा है और सतह के फैलाव से वाष्पीकरण की प्रक्रिया में भी तेजी आती जा रही है। अधिकांश वाष्प पृथ्वी की सतह से 8-10 किलोमीटर ऊंचाई पर पृथ्वी के चारों तरफ इकट्ठा हो रही है। जब भी स्थानीय क्षेत्रों में मौसम में हलचल होती है तो या तो बादल हो जाते हैं या बारिश अथवा ओले पड़ने लगते हैं। यह स्थिति मैदानी भाग हो या रेगिस्तान, कहीं भी पाई जा रही है। इस वर्ष पुनः मौसम का मिजाज बदलता रहेगा और ठंडक का असर मार्च व अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक कम से कम दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश का कुछ भाग व बिहार के कछरी भाग में बना रहेगा और छिटपुट बारिश की संभावना बनी रहेगी। यही नहीं, गर्मी इस वर्ष पिछले साल की अपेक्षा 0.5 से लगभग 1 डिग्री तक अधिक बढ़ सकती है और लू के थपेड़े अप्रैल, मई व जून के द्वितीय सप्ताह तक देखने को मिलेंगे। अब जलवायु परिवर्तन में बढ़ोतरी से बारिश तथा ठंड 9-10 माह से अधिक समय तक रहेगी और भीषण गर्मी मात्र दो-ढाई माह तक ही सिमटेगी।